2013 में 8.1 फीसदी सीमेण्ट उपभोग वृद्धि का अनुमान

19 जनवरी : पोर्टलैण्ड सीमेण्ट एसोसिएशन (PCA) की हालिया रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है। कि साल 2013 में देश में सीमेण्ट उपभोग में 8.1 फीसदी का इजाफा होगा जो कि इसकी साल 2012 की रिपोर्ट के अनुमानों के मुकाबले कहीं अधिक है। बढ़ोतरी वाला यह संशोधन उन समायोजनों को प्रदर्शित करता है जो कि हालिया बुनियादी ढाँचागत मजबूती पर सहमति, मजबूत आर्थिक उभार की पहचान तथा आवासीय निर्माण गतिविधियों के आशावादी मूल्याँकन की रोशनी में लगाए गए हैं। जनवरी की रिपोर्ट मे 2012 का सीमेण्ट उपभोग 78.5 मिलियन मीटरिक टन प्रदर्शित है जो कि साल 2011 की तुलना में 8.9 फीसदी अधिक है।

साल 2013 में सीमेण्ट के उपभोग मे जो भी वृद्धि होगी वह मोटे तौर पर आवासीय निर्माण की बदौलत होगी। 2013 में यह आँकड़ा 9,50,000 इकाईयों तक पहुँच सकता है जिनमें एकक परिवार निर्माण की संख्या 7,00,000 होने का अनुमान है जबकि 2014 या 2015 तक यह आँकड़ा एक मिलियन तक पहुँचने का अनुमान है। हालाँकि 2012 की पहली तिमाही के मुकाबले 2013 की पहली तिमाही मे गिरावट दिखेगी। यह गिरावट इस बात का संकेत नहीं होगी कि बाजारी कारक कमजोर हो रहे हैं। दूसरी तिमाही में सीमेण्ट उपभोग में मजबूती दिखेगी जो कि 2014 में 8.3 फीसदी इजाफे तक जाएगी।

सीमेण्ट उपभोग में इजाफे के संशोधित अनुमान दूरगामी हैं और 2015-2017 तक के लिए हैं। उस दौरान उपभोग में बढ़ोतरी का आँकड़ा 9.2 फीसदी तक पहुँचेगा। सीमेण्ट उपभोग में इजाफे की शिनाख्त तत्कालीन निर्माण गतिविधियों के स्तर तथा सीमेण्ट की तत्कालीन उपलब्धता से होती है।

जे.के. सीमेण्ट जुटाएगी 200 करोड़

20 जनवरी : कानपुर आधारित जे.के. सीमेण्ट ने अपने शेयर धारकों को प्रेषित नोटिसों के जरिये इक्विटी के रुप में संस्थागत निवेशकों से 200 करोड़ रुपये जुटाने का प्रस्ताव रखा है, जिसका इस्तेमाल कार्यशील-पूँजी व पूँजीगत-खर्च सहित आम कार्पोरेट जरुरतों तथा दूरगामी वृद्धि के लिये किया जाना है। इस आशय से कंपनी ने 9 फरवरी को शेयर धारकों की मीटिंग बुलाई है। जे.के. सीमेण्ट की उत्पादन क्षमता 7.5 मिलियन टन सालाना है और सितंबर-अंत की रिपोर्ट के मुताबिक इसमें प्रमोटरों की अंशधारिता 66.57 फीसदी है। कंपनी की चार उत्पादन इकाइयाँ है। तीन राजस्थान में और एक कर्नाटक में। कंपनी ने अपनी पहली अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन ईकाई के लिये कमर कस ली है। व्हाइट सीमेण्ट-कम-ग्रेसीमेण्ट की दोहरी प्रक्रिया वाली यह इकाई संयुक्त अरब एमीरात के फुजैराह क्षेत्र में लगनी है जो कि फ्री-ट्रेड जोन है। इस प्लाण्ट के जरिये जी.सी.सी. और अफ्रीकी देशों की बाजारों को आपूर्ति की जा सकेगी। प्रस्तावित प्लाण्ट की सालाना उत्पादन क्षमता 0.6 मिलियन टन होगी। हालाँकि यह क्षमता व्हाइट सीमेण्ट के लिये होगी लेकिन प्लाण्ट में इतना लचीलापन रहेगा कि इसके परिचालन में परिवर्तन करके एक मिलियन टन तक ग्रे-सीमेण्ट का उत्पादन किया जा सकेगा। इसके अलावा कंपनी अपने ब्राउनफील्ड विस्तार के जरिये तीन टन सालाना उत्पादन बढ़ाने की योजना भी बना रही है। मौजूदा साल की जुलाई-सितंबर तिमाही में कंपनी ने 714.88 करोड़ रुपये राजस्व के चलते 54.09 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

विकाट समूह ने गुलबर्गा से सीमेण्ट की लदान शुरु की

बैंगलौर 16 जनवरी : सीमेण्ट उत्पादक विकाट-ग्रुप ने आज कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में स्थित चात्रसाला प्लाण्ट से 2.75 मि.ट. लदान की पहली खेप शुरु की। प्लाण्ट की कुल उत्पादन क्षमता 8.25 मिलियन टन सालाना है। इस प्लाण्ट के माध्यम से भारती सीमेण्ट के ब्राण्ड नाम से सीमेण्ट की मार्केटिंग होगी जिसका इस्तेमाल घरेलू उपभोग के लिए होगा। कंपनी का फोकस उत्तरी आंध्र प्रदेश, उत्तरी कर्नाटक और महाराष्ट्र की बाजारों पर है। यह प्लाण्ट हैदराबाद , पुणे और मुंबई से नजदीक पड़ता है।

गुलबर्गा का यह प्लाण्ट फ्रांसीसी विकाट समूह और सागर सीमेण्ट के संयुक्त उद्यम के रुप में स्थापित हुआ था। आंध्र प्रदेश के कडापा जिले में भारती सीमेण्ट के साथ विकाट समूह का 5 मिलियन टन सालाना क्षमता का एक प्लाण्ट पहले से ही है। आंध्र प्रदेश का यह प्लाण्ट 2009 से परिचालन में है।

महाराष्ट्र और दक्षिणी राज्यों मे भारती सीमेण्ट के 104 वेयर हाउस हैं। कंपनी ने आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, गोआ, महाराष्ट्र, अंण्डमान निकोबार और पाण्डिचेरी के सभी बाजारों मे 104 सी. एण्ड एफ. एजेण्ट नियुक्त कर रखे हैं ताकि कंपनी अपने डीलरों व कस्टमरों को दिये गए ''24 घण्टे में डिलिवरी'' का संकल्प निभा सके। विकाट समूह का ''भारती सीमेण्ट'' ब्राण्ड OPC 43 ग्रेड, OPC 53 ग्रेड ,पी.पी.सी. और पी.यस.सी. का उत्पादन करता है।

हाइडिलबर्ग ने अपनी क्षमता 5 मिलियन टन की

16 जनवरी : जर्मनी की हाइडिलबर्ग सीमेण्ट ने अपनी मार्केटिंग क्षमता बढ़ाते हुए 1400 करोड़ की विस्तार योजना के पहले चरण का परिचालन शुरु किया। अब कंपनी की उत्पादन क्षमता 5 मिलियन टन सालाना हो गई है। उत्तर प्रदेश की झाँसी ग्राइण्डिग इकाई के रफ्तार पकड़ने से पहले इस अंतर्राष्ट्रीय सीमेण्ट निर्माता ने 2006 में मैसूर सीमेण्ट के अधिग्रहण से भारतीय बाजारों में प्रवेश किया था। झाँसी प्लाण्ट की उत्पादन क्षमता अब 2.7 मिलियन टन सालाना है जो कि पहले 0.8 मिलियन टन थी।

कंपनी सूत्रों के मुताबिक कंपनी मध्य प्रदेश के दमोह प्लाण्ट की उत्पादन क्षमता बढ़ाकर 6 मिलियन टन सालाना करेगी। जिसकी घोषणा जल्दी ही की जाएगी। उक्त दोनों प्लाण्टों में कुल मिलाकर 1400 करोड़ रुपये का निवेश होगा। हाइडिलबर्ग मुख्य रुप से मध्य भारत के बाजारों में सीमेण्ट की मार्केटिंग करती है और अब अपने ''माइसेम'' ब्राण्ड को देश के दूसरे बाजारों में भी स्थापित करने के प्रयास मे जुटी है। कंपनी ने साल -2011 में अब तक की सर्वाधिक बिक्री दर्ज की।

डालमियाँ सीमेण्ट 2014 तक 1800 करोड़ निवेश करेगी

कोलकता 18 जनवरी : डालमियाँ सीमेण्ट (भारत) लिमिटेड ने 1800 करोड़ रुपये के निवेश से कर्नाटक और पूर्वोत्तर में अपनी उत्पादन क्षमता का विस्तार करने की योजना बनाई है। इस योजना से कंपनी की वर्तमान उत्पादन क्षमता 17 मिलियन टन सालाना से बढ़कर 21 मिलियन टन सालाना हो जायेगी। कंपनी कर्नाटक के बेलगाम जिले में 1300 करोड़ रुपये के निवेश से 2.5 मिलियन टन सालाना उत्पादन क्षमता वाला ग्रीन फील्ड प्लाण्ट लगाएगी। इसके अलावा पूर्वोत्तर में भी कंपनी के दो प्लाण्ट हैं जिनकी क्षमता बढ़ाई जानी है। ओ.सी.यल. इण्डिया लिमिटेड में भी डालमियाँ सीमेण्ट की 45.4 फीसदी की हिस्सेदारी है जहाँ 1.3 मिलियन टन क्षमता वृद्धि हेतु निर्माण कार्य जारी है जो कि मौजूदा वित्तीय वर्ष के अंत तक चल सकता है।

कंपनी के सूत्रों के मुताबिक मौजूदा वित्तीय वर्ष में कंपनी की वृद्धि 6 से 7 फीसदी रहने का अनुमान है और यह रफ्तार अगले वित्त वर्ष में और बढ़ने की सम्भावना है।

अंबुजा सीमेण्ट का शुद्ध लाभ घटा

नई दिल्ली / मुंबई, 8 फरवरी : होलसिम की अंबुजा सीमेण्ट्स का वित्तीय प्रदर्शन दिसंबर 2012 की तिमाही में उम्मीद से काफी कम रहा। समीक्षाधीन अवधि में कंपनी का शुद्ध लाभ 30 फीसदी घटकर 212 करोड़ रुपये रह गया जो कि बीते साल की इसी तिमाही में 302 करोड़ रुपये था। जबकि कंपनी की बिक्री मामूली गिरावट के साथ 2313 करोड़ रुपये रही।

अल्ट्राटेक ने ए. बी. जी. सीमेण्ट प्लाण्ट खरीदने की बात चलाई

मुंबई, 7 फरवरी : देश में सर्वाधिक सीमेण्ट की उत्पादक अल्ट्राटेक सीमेण्ट्स गुजरात में ए.बी.जी. सीमेण्ट्स के 6.7 मिलियन टन सालाना क्षमतावाले एक अपूर्ण सीमेण्ट प्लाण्ट की खरीद के लिये बातचीत कर रही है। स्थानीय सूत्रों के मुताबिक अंबुजा सीमेण्ट्स और ए.बी.जी. समूह के आला अधिकारियों के बीच वार्ता के तीन दौर चल चुके हैं। रिपोर्टों के मुताबिक एक्सिस बैंक की निवेश सहायक ''एक्सिस कैपिटल'' अल्ट्राटेक को सलाह दे रही है। कंपनी इस प्लाण्ट को पूरा करके अपनी उत्पादन क्षमता में इजाफा करना चाहती है। सूत्रों के मुताबिक अल्ट्राटेक सीमेण्ट्स ने उक्त प्लाण्ट की खरीद के लिये 4660 करोड़ (भरतीय रुपये)' का प्रस्ताव रखा है जबकि लगता है कि ए.बी.जी. सीमेण्ट 5008 करोड़ (भारतीय रुपये) माँग रही है।'

घट रहा है मध्यम व बड़ी सीमेण्ट कंपनियों के बीच का अंतर

मुंबई , 29 जनवरी : बड़ी और मध्यम क्षेणियों की सीमेण्ट कंपनियों के मूल्यांकन का बढ़ता हुआ अंतर आगामी महीनों में कम हो सकता है क्योंकि सीमेण्ट उद्योग को मध्यम आकार की सीमेण्ट कंपनियों द्वारा अपने समकक्षों के मुकाबले, बेहतर प्रदर्शन दिख रहा है। मध्यम कंपनियों में से श्री सीमेण्ट, जे.के. सीमेण्ट और जे.के. लक्ष्मी सीमेण्ट इत्यादि कंपनियाँ प्रमुख हैं जिनका प्रदर्शन सुधर रहा है। निम्नलिखित कारक ऐसे हैं जो कि मूल्यांकन के अंतर को प्रभावित कर सकते हैं :-

1) वाल्यूम में ऊँची बढ़ोत्तरी :- अब जबकि देश में सीमेण्ट की अति आपूर्ति की स्थिति काबू में है, आशा है कि सीमेण्ट कंपनियाँ अधिक क्षमता उपयोग के स्तर पर परिचालित होंगीं। मध्यम कंपनियों के हालिया प्लाँण्ट, सीमेण्ट उद्योग की औसत उत्पादन क्षमता के स्तर के मुकाबले वर्तमान में कमतर स्तर पर परिचालित हो रहे हैं।

2) बढ़ती माँग के परिदृश्य के चलते आगामी तीन वर्षों में मध्यम कंपनियों के वाल्यूम में 13 से 14 फीसदी तक बढ़ोत्तरी मुमकिन है जबकि बड़ी कंपनियों के वाल्यूम में वृद्धि की दर हाल फिलहाल 7 से 8 फीसदी के आसपास है।

3) लागत-कौशल में सुधारः- केप्टिव पावर क्षमता के विकास में निवेश और लाजिस्टिक-इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार के परिणाम स्वरुप मध्यम कंपनियों की लागत में बचत होगी। कोयले की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में गिरावट और कच्चे तेल की कीमतों में स्थिरता से उत्पादन लागत कीमतों के मुकाबले धीमी रफ्तार से बढ़ेगी। इस प्रकार मार्जिन में काफी सुधार की उम्मीद है।

4) मूल्यांकन :- वर्तमान में अपेक्षाकृत बड़ी सीमेण्ट कंपनियोँ 170-120 डालर प्रतिटन इण्टरप्राइज वेल्यू (EV) के आधार पर परिचालित हैं जो कि मध्यम कंपनियों की 30-40 डालर प्रतिटन के मुकाबले बहुत ज्यादा है। यहाँ तक कि मध्यम कंपनियों का एबिटा भी 3.5-5 है जो कि बड़ी कंपनियों के 8-10 के मुकाबले काफी कम है।

अमृत सीमेण्ट का मेघालय प्लाण्ट चालू

गौहाटी, 28 जनवरी : अमृत सीमेण्ट इण्डिया लिमिटेड ने देश की पूर्वी बाजारों में अपना कारोबार शुरु करने की घोषणा की है। इस कंपनी ने पूर्वोत्तर में उत्पादन क्षमता जोड़ने और नेपाल और बिहार में नई क्षमताएँ जोड़कर 2015-2016 तक अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाकर 5 मिलियन टन सालाना करने के प्रयास शुरु भी कर दिये हैं। अमृत सीमेण्ट मेघालय की जयंतिया पहाड़ी स्थित अपने एक मिलियन टन सालाना क्षमता वाले प्लाण्ट से पूवोत्तर के बाजारों को आपूर्ति करेगी। इस सयंत्र मे 10 मेगावाट क्षमता का पावर केप्टिव प्लाण्ट भी है।

सूत्रों के मुताबिक कंपनी ने अपने चैनल सहयोगियों के साथ मिलाकर इस क्षेत्र मे वितरण हेतु मजबूत नेटवर्क बना लिया है। कंपनी के पास समर्पित लॉजिस्टिक सपोर्ट का फायदा है। कंपनी के पास 30 ट्रकों का अपना खुद का बेड़ा है जिससे वह पूरे क्षेत्र में समय से डिलिवरी सुनिश्चित करने में सक्षम है।

अंबुजा के भाटापारा प्लाण्ट मे हादसा : 5 मरे

बृहस्पतिवार, 6 फरवरी : अंबुजा सीमेण्ट्स के भाटापारा कारखाने मे विगत 31 जनवरी को हुए हादसे में पाँच मौतों की खबर है। हालाँकि यह अपवाद स्वरुप भले हो लेकिन इस हादसे से सीमेण्ट उद्योग में निहित पर्याप्त जोखियों के प्रति गम्भीर चेतावनी मिली है।

अंबुजा सीमेण्ट्स की एक आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक भाटापारा प्लाण्ट में इमारत के ऊपरवाले हिस्से मे फ्लाई ऐश हॉपर को सहारा देने वाला एक स्टील का ढाँचा था जो ढह गया। स्थानीय समाचार पत्रों से मिले ब्योरे के मुताबिक तकरीबन 200 टन फ्लाई ऐश 15 मीटर ऊँचाई से भरमरा कर गिर पड़ा जिसमें 5 मजदूर और एक कर्मचारी दब गए और आखिरकार मर गए। कंपनी के चार अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया है और जाँच के दौरान प्लाण्ट बंद रखा जाएगा।

इससे पहले जनवरी-2013 में अंबुजा के डर्लाघाट प्लाँण्ट में एक ब्वायलर फटने से 8 मजदूर जल चुके हैं। हालाँकि इन हादसों के बावजूद अंबुजा सीमेण्ट और अन्य प्रमुख बड़ी कंपनियों के प्लाण्टों में सुरक्षा उपायों का स्तर बहुत ऊँचा है। अंबुजा सीमेण्ट की सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट के मुताबिक इसके कुल कर्मचारियों व सुपरवाइज्ड वर्कर्स का लास्ट टाइम इंजरी फ्रिक्वेंसी रेट (LTIFR) 1.04 है जो कि 2008 में 3.18 था और उसके बाद से यह स्तर लगातार गिरता जा रहा है।

यदि अन्य कंपनियों के लॉस्ट टाइम इंजरी फ्रिक्वेंसी (LTIFR) के साथ तुलना करें तो पता चलता है कि अल्ट्राटेक में स्थाई कर्मचारियों के बीच यह दर 2011-2012 में 0.82 रही और 2008-2009 से लेकर अब तक इसमे गिरावट दर्ज हो रही है। ए.सी.सी. सीमेण्ट के मुताबिक उसके अपने कर्मचारियों तथा उपठेका कर्मचारियों के हिसाब से साल 2011 में यह दर 0.31 रही। इसी प्रकार श्री सीमेण्ट के अपने व ठेका कर्मियों के हिसाब से 2010-2011 में यह दर 0.91 दर्ज हुई। जहाँ तक अंतर्राष्ट्रीय तुलना का सवाल है तो मिनरल प्रोडक्ट्स एसोसिएशन ने यूनाइटेड किंगडम (UK) के लिये साल 2014 मे 1.79 का मानक निर्धारित किया है।

साल 2012 के मध्य मे अंबुजा सीमेण्ट के राजस्थान प्लाण्ट को दो बार भारत सरकार का सुरक्षा प्रदर्शन पदक (SAFETY PERFORMENCE AWARD) मिल चुका है। जिसमे से पहला ''लोयस्ट एवरेज फ्रिक्वेंट रेट'' पर आधारित औद्योगिक सुरक्षा की आउटस्टैण्डिंग पर्फार्मेंस के लिये था जबकि दूसरा ''एक्सीडेण्ट फ्री इयर'' की श्रेणी मे रनर-अप का था। लाफार्ज इण्डिया, अल्ट्राटेक, ए.सी.सी. सहित अन्य प्रमुख व बड़े सीमेण्ट उत्पादकों का रिकार्ड भी कमोबेश इसी प्रकार का रहा है।

तेज होगी ग्रासिम की रफ्तार

मुंबई, 10 फरवरी : साल 2012 की दिसंबर तिमाही में त्योहारी सीजन तथा कड़ाके की सर्दी के चलते धीमी माँग से सुस्ती रही लेकिन अब जल्द ही मांग में तेजी की उम्मीद दिखाई दे रही है। अल्ट्राटेक द्वारा वित्त वर्ष 2014 के शुरु तक 66 लाख टन सालाना की क्लिंकर क्षमता जोड़े जाने की संभावना है। अल्ट्राटेक द्वारा गुजरात में ए.बी.जी. की 66 लाख टन सालाना क्षमता वाली निर्माणाधीन सीमेण्ट इकाई का अधिगृहण करने की संभावना है।

ग्रासिम अपने कुल राजस्व और मुनाफे का 70 फीसदी से अधिक हिस्सा अपने सीमेण्ट व्यवसाय से प्राप्त करती है जिसका प्रतिनिधित्व अल्ट्राटेक करती है। विभिन्न मदों के आधार पर ग्रासिम का प्रदर्शन निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित है :-

(सभी आँकड़ें करोड़ रुपयों में)

मदें वित्तीय वर्ष वित्तीय वर्ष वित्तीय वर्ष 2013 की 2013 2014 तीसरी तिमाही (अनुमानित) (अनुमानित),शुद्ध बिक्री 6,76,800 28,611.00 33,404.00 (साल-दर-साल के आधार पर प्रतिशत परिवर्तन) 7.00 14.50 16.80 एबिटा 1,307.00 6,662.00 8,142.00 एबिटा (प्रतिशत) 19.30 23.30 24.4 शुद्ध लाभ 549.00 2,828.00 3,392.00 (साल-दर-साल के आधार पर प्रतिशत परिवर्तन) -18.00 14.00 20.00

कर्ज सस्ता, क्या घर भी होंगे सस्ते!

मुंबई, 29 जनवरी : भरतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा रीपो रेट में 0.25 फीसदी की कटौती करने से बैंकों का कर्ज सस्ता होने की संभावना है। लंबे समय से ब्याज दरों में कमी का इंतजार कर रही रियल्टी इंडस्ट्री आरबीआई के इस फैसले से खुश है। कर्ज सस्ता होने से रियल्टी में खरीदारों की संख्या बढ़ने की उम्मीद की जा रही है।

उद्योग जगत ने रीपो रेट में कटौती का स्वागत किया है लेकिन सबसे ज्यादा खुशी भवन निर्माताओं को मिली है क्योंकि ऊँची ब्याज दरों के चलते मध्य वर्ग के उनके ग्राहक उनसे दूर हो गए थे। क्रेडाई के अध्यक्ष ललित कुमार जैन कहते हैं कि हालांकि रीपो रेट में कमी उम्मीद से कम हुई है, इसके बावजूद हम सरकार के इस फैसले का स्वागत करते हैं। जैन के मुताबिक इस साल की शुरुआत अच्छी है और सरकार व बैंकों से मिल रहे संकेतों के आधार पर यह आभास हो रहा है कि आरबीआई अगले कुछ महीनों में रीपो दर में करीब एक से डेढ़ फीसदी और कमी करेगा जिससे कर्ज और सस्ता होगा और बाजार में नए ग्राहक तेजी से आना शुरु हो जाएंगे। वह उम्मीद जताते हुए कहते हैं कि आरबीआई के इस कदम से बाजार के माहौल में सुधार आएगा और खरीदार बाजार में आएंगें।

ऑल इंण्डिया बिल्डर्स एसोसिएशन के सचिव आनंद गुप्ता कहते हैं लंबे समय के बाद आरबीआई ने एक अच्छा कदम उठाया है, उम्मीद से कम कटौती होने के बावजूद अच्छा लगा, खरीदारों के साथ कारोबारियों को भी बैंकों से आसानी से कर्ज मिलने की उम्मीद की जा रही है। कम बजट के घर बनाने वाले रश्मि हाउसिंग के निदेशक योगेश भोसामिया के मुताबिक आरबीआई के इस फैसले का सबसे ज्यादा फायदा मध्यम और कम आय वाले लोगों को होगा क्योंकि ऊँची ब्याज दरों के कारण वह घर नहीं खरीद पा रहे थे।

रियल्टी के अलावा दूसरे उद्योग संगठनों ने भी इस कदम का स्वागत किया है। मर्चेंट चैंबर्स ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष हीरानंदनी कहते हैं कि इससे विकास को बढ़ावा मिलेगा, ब्याज दरों में कमी का फायदा सभी सेक्टरों को होगा लेकिन सबसे ज्यादा फायदा रियल एस्टेट और ऑटो सेक्टर को होने की उम्मीद है।

श्री सीमेण्ट को विद्युत सेगमेंट से मिल रही है बढ़त

नई दिल्ली 29 जनवरी : सीमेण्ट कंपनी श्री सीमेण्ट के दिसंबर नतीजों को विद्युत सेगमेंट से ताकत मिली जबकि सीमेण्ट की मांग और उससे कमाई धीमी बनी रही। भविष्य में ठंड समाप्त होने के बाद मांग में तेजी आएगी जिससे सुधार होगा। दूसरी छमाही में भी विद्युत सेगमेंट का प्रदर्शन अच्छा रहने की संभावना है।

मांग में सुस्ती

त्योहारी सत्र के साथ सुस्त मांग, गुजरात और हिमाचल प्रदेश में चुनाव और उत्तर भारत में कड़ाके की सर्दी का दिसंबर तिमाही में असर पड़ा। पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों में कुछ कारोबार के साथ कंपनी मुख्य तौर पर उत्तर भारत में परिचालन करती है। हालांकि उत्तर, मध्य और पश्चिम भारत में सीमेण्ट की कीमतें प्रति बैग क्रमशः 281 रुपये, 277 रुपये और 283 रुपये पर हैं जो एक साल पहले की समान तिमाही की तुलना में अधिक हैं, लेकिन सितंबर तिमाही की तुलना में ये कीमतें 3 से 5 फीसदी नीचे हैं। इस प्रकार 3,733 रुपये प्रति टन पर औसतन प्राप्ति तिमाही आधार पर 4.4 फीसदी घटी है।

कमजोर मांग से कंपनी की सीमेण्ट और क्लिंकर बिक्री 29.9 लाख टन पर रही जो तिमाही आधार पर 1.7 फीसदी और दिसंबर 2011 की तिमाही के मुकाबले 0.7 फीसदी की गिरावट है। कंपनी को परिवहन लागत में वृद्धि, प्रति टन एबिटा में सलाना आधार पर 3.1 फीसदी और तिमाही आधार पर 14 फीसदी की कमी के कारण दबाव का सामना करना पड़ा, हालांकि कोयले की कम लागत से वह कुछ हद तक इस दबाव की भरपाई करने में कामयाब रही।

मजबूत तिमाही

विद्युत सेगमेंट का प्रदर्शन दमदार रहा। कंपनी के राजस्व में इस सेगमेंट का योगदान लगभग 22 फीसदी का रहा और इसकी यूनिट बिक्री बढ़ कर 78.6 करोड़ हो गई जबकि सितंबर 2012 की तिमाही में यह 30.7 करोड़ यूनिट और दिसंबर 2011 की तिमाही में 25.6 करोड़ यूनिट थी। 3.97 रुपये पर प्रति यूनिट प्राप्ति भी 4.45 रुपये और 4.30 रुपये की संभावित प्राप्ति की तुलना में काफी कम है। फिर भी कंपनी को कम लागत की वजह से 99 करोड़ रुपये का ब्याज एवं कर पूर्व मुनाफा हासिल करने में मदद मिली जबकि एक साल पहले उसे 112 करोड़ रुपये का नुकसान दर्ज करना पड़ा था। विद्युत सेगमेंट की मदद से श्री सीमेण्ट का कुल राजस्व सालाना आधार पर 19.4 फीसदी और तिमाही आधार पर 8 फीसदी की वृद्धि दर्ज कर सकता है। हालांकि कुल परिचालन मार्जिन घटा है, लेकिन अन्य आय में मजबूती और मूल्यह्रास लागत में नरमी का लाभ मिला है। सालाना आधार पर शुद्ध लाभ 267 करोड़ अधिक है।

परिदृश्य में सुधार

भविष्य में उत्तर भारत में सीमेण्ट की मांग में सुधार की संभावना हैं, जबकि कुछ कीमत वृद्धि पहले ही हो चुकी है। सिटी के विश्लेषकों ने 22 जनवरी की अपनी रिपोर्ट में कहा कि पूरे भारत में सीमेण्ट की कीमतों में नवंबर/दिसंबर में गिरावट के बाद अब तेजी का संकेत दिख रहा है। उद्योग सूत्रों के अनुसार मांग में सुधार और रेल डिब्बों की किल्लत से कीमतें इस महीने बढ़ रही हैं। दिल्ली (उत्तर) में कीमतें 40 रुपये (16 फीसदी) बढ़ कर 285 रुपये प्रति बैंग पर पहँच गई हैं क्योंकि अब ठंड कम होने लगी है। 2012-13 की दूसरी छमाही के दौरान बिक्री में सुधार आएगा। सालाना आधार बिक्री में 9.5 फीसदी तक की वृद्धि और शुद्ध प्रप्तियों में 8.3 फीसदी की वृद्धि का अनुमान है। विद्युत सेगमेंट का शानदार प्रदर्शन बरकरार रहेगा।

विस्तार से ताकत

कंपनी को राजस्थान के रास में यूनिट 9 और 10 के जून 2013 और जून 2014 तक शुरु हो जाने की संभावना है जिससे उसकी क्लिंकर क्षमता बढ़ कर 1.35 करोड़ टन हो जाएगी। राजस्थान और बिहार में जून 2014 तक ग्राइंडिंग इकाइयां भी शुरु होने का अनुमान है। सीमेण्ट क्षमता वित्त वर्ष 2015 तक 1.85 करोड़ टन पर पहुंच सकती है।

अल्ट्राटेक सीमेण्ट : घीमी मांग से बढ़ रहा है दबाव

नई दिल्ली 28 जनवरी : भारत की सबसे बड़ी सीमेण्ट कंपनी अल्ट्राटेक समेत ज्यादातर सीमेण्ट कंपनियों का प्रदर्शन 2012 में शानदार रहा। त्योहारी सत्र के दौरान निर्माण गतिविधियों में सुस्ती, कुछ राज्यों में चुनाव और उत्तर भारत में कड़ाके की सर्दी की वजह से मांग में कमी रही। अल्ट्राटेक के दिसंबर तिमाही नतीजों में भी इसका असर दिखा है। हालांकि दिसंबर तिमाही में अल्ट्राटेक का मुनाफा सालाना आधार पर 2.6 फीसदी घटा है, लेकिन कंपनी उम्मीद की तुलना से बेहतर परिणाम दर्ज करने में सफल रही। वित्त वर्ष 2013 के अंत के बाद बाजार भविष्य (वित्त वर्ष 2014 और वित्त वर्ष 2015) की आय के असर को भुनाना शुरु कर देगा और मूल्यांकन सहज स्तर पर आ जाएगा। मकर संक्रांति के पर्व के बाद मांग में तेजी को लेकर उम्मीद बढ़ गई है। सीमेण्ट कंपनियों ने ऊँची लागत की भरपाई के लिए कीमत में भी इजाफा किया है। विश्लेषकों की राय है कि अल्ट्राटेक में मौजूदा गिरावट का लाभ मध्यावधि से दीर्घावधि परिदृश्य को ध्यान में रख कर उठाया जा सकता है। भारत भर में अल्ट्राटेक की मौजूदगी है और वित्त वर्ष 2014 में 92 लाख टन की नई क्षमता भी शुरु होने का अनुमान है।

मजबूत विकास परिदृश्य :-

In~Crore	Q3FY13	FY13E	FY14E
Net sales	4,857	21,653	26,059
% change Y-o-Y	6.2	13.5	20.4
Ebitda	1,024	4,756	6,099
Ebitda(%)	21.1	22.0	23.4
Net profit	601	2,783	3,556
% change Y-o-Y	-2.6	23.6	27.8

तीसरी तिमाही

कंपनी की शुद्ध बिक्री सालाना आधार पर 6.4 फीसदी (तिमाही आधार पर 3.4 फीसदी) बढ़ कर 4857 करोड़ रुपये रही और यह ब्लूमबर्ग के अनुमान से 3 फीसदी अधिक है। कुल सीमेण्ट मांग सुस्त रहने के बावजूद बेहतर मिश्रित प्राप्तियों (4892 रुपये प्रति टन जो सालाना आधार पर 9.5 फीसदी तक अधिक है) की वजह से बिक्री में मदद मिली है। ग्रे सीमेण्ट की घरेलू बिक्री 96.2 लाख टन पर सपाट बनी रही जबकि वॉल केयर पुट्टी की बिक्री बढ़ कर 2.62 लाख टन (दिसंबर 2011 की तिमाही में 2.46 लाख टन) रही। हालांकि कोयले की वैश्विक कीमतें 100 डॉलर के स्तर से नीचे बनी हुई हैं, लेकिन रुपये में गिरावट की वजह से अल्ट्राटेक के लिए लाभ सीमित ही रहेगा। प्राप्तियों में वृद्धि से अल्ट्राटेक को डीजल कीमतों में वृद्धि और परिवहन लागत में इजाफा होने के बावजूद एबिटा मार्जिन सालाना आधार पर 21.1 फीसदी पर बनाए रखने में मदद मिली है। अन्य 96.5 करोड़ रुपये पर एक साल पहले की तिमाही के 144 करोड़ रुपये की तुलना में कम है जिससे शुद्ध लाभ में सालाना आधार पर 2.6 फीसदी तक की गिरावट आई है।

मार्च तिमाही

तिमाही दर तिमाही प्राप्तियों में सुधार के सिलसिले में दिसंबर 2012 की तिमाही में ठहराव देखा गया। हालांकि सालाना आधार पर कीमतें ऊपर हैं और दिसंबर 2012 की तिमाही में 289 रुपये प्रति बैग पर सीमेण्ट की औसत कीमत सितंबर 2012 की तिमाही में दर्ज 300 रुपये प्रति बैग की तुलना में 3.7 फीसदी कम है।

मकर संक्रांति के बाद उत्तर भारत में ठंड में कुछ कमी आनी शुरु हो गई है और शुभ दिनों को देखते हुए भी निर्माण गतिविधियों में तेजी आने की उम्मीद है।

सीमेण्ट कीमतें सभी क्षेत्रों में कारोबार श्रेणी में 3 से 25 रुपये प्रति बैग और गैर व्यापार श्रेणी में 5 से 50 रुपये प्रति बैग तक बढ़ चुकी है। पिछले एक सप्ताह में दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में तेज रिकवरी (5 से 30 रुपये प्रति बैग) दर्ज की गई है। पूर्वी क्षेत्र में भी कीमतों में वृद्धि 5 से 20 रुपये प्रति बैग के दायरे में रही है। विश्लेषकों का कहना है कि कुछ क्षेत्रों में मांग में सुधार आया है और बाकी बाजारों में भी सीमेण्ट कीमतों में तेजी आने की उम्मीद है।

क्षमता विस्तार

अल्ट्राटेक ने 120 मेगावॉट के निजी विद्युत संयंत्र के साथ अपनी सीमेण्ट क्षमता 92 लाख टन तक बढ़ाने के लिए पूंजीगत खर्च किए जाने की योजना बनाई है। उम्मीद की जा रही है कि यह विद्युत संयंत्र वित्त वर्ष 2014 की पहली छमाही में पूरा हो जाएगा। इससे कंपनी की कुल सीमेण्ट क्षमता बढ़ कर 6.2 करोड़ टन पर पहुँच जाएगी। क्षमता वृद्धि से वर्ष 2014 की दूसरी छमाही से कारोबार की रफ्तार में तेजी आने की संभावना है।

दिसंबर - 2012 तिमाही में विभिन्न सीमेण्ट कंपनियों का प्रदर्शन

(सभी आँकड़ें करोड़ रुपये में)

कंपनी का नाम और मदें	2012 की दिसंबर तिमाही की तुलना में प्रतिशत अंतर	2011 की दिसंबर तिमाही की तुलना में प्रतिशत अंतर
ए.सी.सी.		
शुद्ध लाभ	251.24	-46.00
प्राप्तियाँ	2768.00	+2.00
अंबुजा सीमेण्ट		
शुद्ध लाभ	1293.21	+5.33
प्राप्तियाँ	9795.03	+14.30
जेके सीमेण्ट		
शुद्ध लाभ	54.38	+25.00
प्राप्तियाँ	688.08	+12.00
जे .के. लक्ष्मी		
शुद्ध लाभ	41.24	-16.24
प्राप्तियाँ	493.68	+12.20
अल्ट्राटेक		
शुद्ध लाभ	600.81	-2.60
प्राप्तियाँ	4882.08	+6.05

ए.सी.सी. व अल्ट्राटेक के प्रदर्शन मे सुधार की उम्मीद

दिल्ली/मुम्बई, 18 फरवरी : प्रमुख सीमेण्ट कंपनियों एसीसी, अंबुजा सीमेण्ट और अल्ट्राटेक का प्रदर्शन दिसंबर 2012 की तिमाही के दौरान सुस्त रहा। मालभाड़ा दरों में इजाफा, त्योहारी सत्र की वजह से तिमाही आधार पर प्राप्तियों में कमी और उत्तर भारत में कड़ाके की सर्दी की वजह से मांग प्रभावित हुई। दिसंबर 2012 की तिमाही में सीमेण्ट की औसतन कीमतें 289 रुपये प्रति बैग पर रहीं जो सितंबर तिमाही की 300 रुपये प्रति बैग की कीमतों की तुलना में 3.7 फीसदी कम है।

हालांकि मांग में बड़ी रिकवरी आनी अभी बाकी है अल्ट्राटेक को मांग में किसी तरह की तेजी का प्रमुख लाभ मिलने की संभावना है, क्योंकि कंपनी द्वारा जल्द ही नई क्षमता वृद्धि हासिल किए जाने की संभावना है। पूरे देश में मजबूत उपस्थिति रखने वाली अल्ट्राटेक कमजोर मानी जाने वाली दिसंबर तिमाही में भी मुनाफे को काफी हद तक बनाए रखने में सफल रही जबकि इस अवधि में एसीसी और अंबुजा के मार्जिन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मूल्यांकन भी अपेक्षाकृत उचित है। मौजूदा स्तरों पर एसीसी और अंबुजा वर्ष 2014 की अनुमानित क्षमताओं के आधार पर लगभग 128 डॉलर और 179 डॉलर की उद्यम वैल्यू/प्रति टन पर कारोबार कर रहे हैं जबकि अल्ट्राटेक वित्त वर्ष 2015 की अनुमानित क्षमताओं के आधार पर 136 डॉलर के आसपास कारोबार कर रहा है।

सुस्त दिसंबर तिमाही

दिसंबर तिमाही में एसीसी का राजस्व सालाना आधार पर 24 फीसदी बढ़ा। समीक्षाधीन अवधि में कंपनी के राजस्व को खासकर रेडी-मिक्स कंक्रीट (आरएमसी) व्यवसाय के एकीकरण से मदद मिली। आरएमसी को अलग रख कर बात करें तो राजस्व वृद्धि सालाना आधार पर महज 3 फीसदी और तिमाही आधार पर 5.3 फीसदी पर रही।

चूंकि आरएमसी कम मार्जिन अर्जित करता है, इसलिए उसके मुनाफे पर कम प्रभाव पड़ा है। लागत बढ़ने और कम प्राप्तियों की वजह से एसीसी का मुनाफा बड़े पैमाने पर प्रभावित हुआ है। अंबुजा सीमेण्ट का मुनाफा भी प्रभावित हुआ है। खासकर एक क्षेत्रीय कंपनी होने के नाते तिमाही आधार पर इसकी प्राप्तियों में गिरावट 5.9 फीसदी पर रही जो एसीसी द्वारा दर्ज 2.8 फीसदी की तुलना में काफी अधिक है। 18.5 फीसदी पर एबिटा मार्जिन सितंबर तिमाही के 26.10 फीसदी की तुलना में काफी कम है।

तुलनात्मक रुप से अल्ट्राटेक ने 21.1 फीसदी का एबिटा मार्जिन दर्ज किया जो सितंबर तिमाही में दर्ज 21.4 फीसदी की तुलना में थोड़ा कम है।हालांकि एलारा कैपिटल के रवि सोडा का कहना है कि वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही होल्सिम समूह को इन दो कंपनियों के लिए हमेशा कमजोर रही है। ये कंपनियां अधिक प्रावधान पर जोर देती हैं जिससे बाजार को अनुमान की तुलना में अधिक निराशा हाथ लगती है।

कमजोर मांग

दिसंबर तिमाही में सुस्त मांग में चालू तिमाही में भी अधिक बदलाव नहीं दिख रहा है। सीमेण्ट उद्योग के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण अवधि है, क्योंकि इस समय ऐतिहासिक रूप से मांग में तेजी आती है।

बाजार प्राप्तियों में सुधार के लिए मांग में तेजी की उम्मीद कर रहा है। सकारात्मक बात यह है कि सीमेण्ट कीमतें कुछ क्षेत्रों में 4 से 5 फीसदी बढ़ी हैं जिससे कुछ हद तक राहत मिली है। हालांकि मांग में रिकवरी के समय को लेकर विश्लेषक अनिश्चित बने हुए हैं। एलारा कैपिटल के सोड़ा का कहना है कि मध्यावधि में मांग में तेजी आनी चाहिए, क्योंकि आम चुनावों से सरकारी खर्च में तेजी आ सकती है। मौजूदा समय में सीमेण्ट शेयरों में गिरावट दर्ज की गई है। लेकिन मांग में तेजी आना रुझानों में बदलाव के संदर्भ में एक प्रमुख एवं चिंताजनक कारक बना हुआ है, क्योंकि उत्तर भारत में मांग अभी भी सुस्त बनी हुई है।

क्षमता वृद्धि से अल्ट्राटेक को बढ़त

मांग में तेजी की उम्मीद में कंपनियां मध्यावधि से दीर्घावधि में बिक्री बढ़ाए जाने के लिए क्षमता वृद्धि पर जोर दे रही हैं। क्षमता विस्तार का सबसे अधिक लाभ अल्ट्राटेक को मिलने की संभावना है, क्योंकि जून 2013 की तिमाही तक उसकी 66 लाख टन सालाना की क्लिंकर क्षमता शुरू होने की संभावना है। अंबुजा ने हाल में छत्तीसगढ़ में 6 लाख टन सालाना की क्षमता हासिल की है जिसके साथ ही उसकी कुल क्षमता 2.75 करोड़ टन सालाना की हो गई है।

अंबुजा दुर्घटना मामले की जांच पर सवाल

रायपुर, 20 फरवरी : अंबुजा के सीमेण्ट संयंत्र में औद्योगिक दुर्घटना की छानबीन कर रहा जांच अधिकारी कंपनी के अतिथि गृह में करीब दो महीने तक ठहरा था, जिससे मामले की निष्पक्ष जांच पर सवाल खड़े हो गए हैं। 31 जनवरी को छत्तीसगढ़ में अंबुजा सीमेण्ट के भाटापाड़ा संयंत्र में हॉपर गिरने से पांच लोगों की मौत हो गई थी। मृतकों की लाशों को दो दिन तक चले राहत और बचाव अभियान के बाद मलबे से निकाला जा सका, जिससे कंपनी की सुरक्षा इंतजामों पर प्रश्नचिन्ह लग गया।

विपक्ष के नेता रवींद्र चौबे ने बुधवार को छत्तीसगढ़ विधानसभा में इस मामले को उठाते हुए कहा, 'दो दिन तक चले बचाव अभियान के नाम पर अंबुजा सीमेण्ट के अधिकारियों ने उन सबुतों को मिटा दिया, जो गंभीर अनियमितताओं को बयां करते थे।' चौबे ने कहा कि हॉपर जर्जर स्थिति में था और इसे देखते ही पता चलता था कि यह किसी दुर्घटना को न्योता दे रहा है। उन्होंने कहा कि कंपनी के तकनीकी दल ने एक साल पहले कहा था कि हॉपर और ढांचा ठीक नहीं है। लेकिन प्रबंधन ने इसकी अनदेखी की और इसका नतीजा बड़ी दुर्घटना के रूप में देखने को मिला।

विपक्षी नेता के साथ ही सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के विधायक देवजी पटेल ने घटना की निष्पक्ष जांच पर सवाल उठाया। राज्य सरकार ने घटना की जांच के लिए बलोदा बाजार के संयुक्त जिलाधिकारी ओंकार यदु की अध्यक्षता में एक पांच सदस्यीय समिति गठित की थी।

चौबे ने कहा, 'यदु अंबुजा सीमेण्ट का अतिथि है और वह 55 दिन के लिए कंपनी के अतिथि गृह में उनके अतिथ्य में रहा।' राज्य सरकार को खुद ही सोचना चाहिए कि वह अधिकारी मामले की कैसे निष्पक्ष जांच करेगा, जो इतने लंबे समय तक अंबुजा के अतिथि गृह में ठहराया। सदस्यों ने अंबुजा सीमेण्ट संयंत्र में हुई दुर्घटना की न्यायिक जांच की मांग की।